क्षितिज भाग 2 (कक्षा 10)

विस्तृत अध्ययन नोट्स (Detailed Notes)

Schorbit

पाठ 1: सूरदास (पद)

1. कवि परिचय (Author Introduction)

- **कवि का नाम:** भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि **सूरदास**।
- **प्रमुख रचनाएँ:** सूरसागर, साहित्य-लहरी, सूरसारावली। (पाठ के पद 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से लिए गए हैं)।
- **विशेषता:** सूरदास जी वात्सल्य (बचपन का प्रेम) और शृंगार रस के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण स्वयं गोकुल नहीं लौटे, बल्कि उन्होंने अपने मित्र उद्धव के माध्यम से गोपियों के पास **'योग-साधना' (निर्गुण ब्रह्म)** का संदेश भेज दिया। गोपियाँ ज्ञान-मार्ग की बजाय प्रेम-मार्ग को पसंद करती थीं। जब उद्धव उन्हें योग का उपदेश दे रहे थे, तभी वहाँ एक भौंरा (भ्रमर) आ गया। गोपियों ने उस भौंरे को माध्यम बनाकर उद्धव पर जो व्यंग्य बाण छोड़े, उसे ही साहित्य में **'भ्रमरगीत'** कहा जाता है।

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

पद 1: उद्धव पर व्यंग्य

गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत भाग्यशाली हो जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम के बंधन से मुक्त हो। तुम्हारी स्थिति जल में रहने वाले कमल के पत्ते और तेल लगी मटकी के समान है, जिन पर पानी की एक बूँद भी नहीं टिकती। तुम प्रेम रूपी नदी में उतरे ही नहीं। हम तो भोली अबलाएँ हैं, जो कृष्ण के प्रेम में वैसे ही चिपक गई हैं जैसे गुड़ में चींटियाँ चिपक जाती हैं।

पद 2: गोपियों की विरह वेदना

गोपियाँ कहती हैं कि हमारे मन की इच्छाएँ मन में ही रह गईं। हमें उम्मीद थी कि कृष्ण लौटेंगे, लेकिन उनके इस योग संदेश ने हमारी विरहाग्नि (अलगाव की पीड़ा) को और भड़का दिया है। जब कृष्ण ने ही प्रेम की मर्यादा (मरजादा) का पालन नहीं किया, तो अब हम धैर्य कैसे धारण करें?

पद 3: कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम

गोपियाँ कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' के समान बताती हैं। जैसे हारिल पक्षी अपनी लकड़ी को कभी नहीं छोड़ता, वैसे ही गोपियों ने मन, कर्म और वचन से कृष्ण को कसकर पकड़ा हुआ है। वे सोते-जागते कृष्ण का नाम रटती हैं। उद्धव का योग संदेश उन्हें एक 'कड़वी ककड़ी' और एक अजीब सी बीमारी (व्याधि) के समान लगता है।

पद 4: कृष्ण पर राजनीति पढ़ने का आरोप

गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण अब बहुत चतुर हो गए हैं और उन्होंने 'राजनीति' पढ़ ली है। पहले वे दूसरों के कल्याण के लिए काम करते थे, अब वे स्वयं हम पर अन्याय कर रहे हैं। एक सच्चे राजा का 'राजधर्म' प्रजा को सताना नहीं होता, बल्कि उनकी भलाई करना होता है।

4. काव्यगत एवं साहित्यिक विशेषताएँ

- **भाषा:** साहित्यिक **ब्रजभाषा** का अत्यंत कोमल और मधुर प्रयोग।
- **रस: वियोग श्रृंगार रस** (गोपियों की विरह वेदना का वर्णन)।
- **अलंकार:**
  - **रूपक अलंकार:** 'प्रीति नदी', 'व्याधि'।
  - **उपमा अलंकार:** 'पुरइनि पात', 'तेल की गागरि', 'करुई ककरी', 'हारिल की लकरी'।
  - **अनुप्रास अलंकार:** 'पुरइनि पात', 'कान्ह-कान्ह'।
- **शैली:** व्यंग्यात्मक (Taunting) और संवाद शैली।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य **सगुण भक्ति (प्रेम मार्ग)** को निर्गुण भक्ति (ज्ञान/योग मार्ग) से श्रेष्ठ सिद्ध करना है। सच्चे और एकनिष्ठ प्रेम के सामने बड़े-बड़े ज्ञानियों (जैसे उद्धव) का ज्ञान भी हार जाता है। प्रेम में तर्क नहीं, बल्कि समर्पण होता है।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **उद्धव की तुलना:** कमल के पत्ते और तेल की गगरी से की गई है।
- **योग संदेश की तुलना:** कड़वी ककड़ी और व्याधि (बीमारी) से की गई है।
- **गोपियों की स्थिति:** गुड़ से लिपटी चींटियों और हारिल पक्षी के समान है।
- **भ्रमरगीत का नाम:** भौंरे (भ्रमर) को संबोधित करके गाए गए गीत।
- **राजधर्म:** प्रजा को न सताना और उनके सुख-दुःख का ध्यान रखना।

Scholarbit